सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 मई)

मत्ती 20:28 मनुष्य का पुत्र; वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे॥

यदि हमने प्रभु के प्रति पूरा समर्पण किया है, तो हमारा हर एक बलिदान, हमारे न्यायोचित अधिकार का और हमारे हित का, जो हम नई सृष्टि के रूप में करते हैं, अपने पति या बच्चे या पिता या माँ या पड़ौसी या मित्र के बदले या सच्चाई के भाईयों के लिए, ये प्रभु के लिये किये गए बलिदान की गिनती में आता है, जैसे की हमने प्रभु के लिए किया हो; जबकि, यदि इसी सेवा को किसी और नज़रिए से किया जाये -- कोई अधर्मी के द्वारा, जिसने अपने आप को प्रभु को समर्पण नहीं किया है, या केवल ये बलिदान किसी निजी व्यक्ति के प्रति किया गया हो और न कि प्रभु के प्रति बलिदान के रूप में किया गया हो -- तो हम जो याजक हैं उस रूप में, इसकी गिनती हमारे बलिदान में नहीं की जाएगी। `Z.'03-407` R3266:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 मई)

2 तीमुथियुस 3:12 पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे।

विरोध होगा, इसकी उम्मीद हमें रहनी चाहिए, और निःसंदेह जब तक हम मृत्यु में अपनी दौड़ को पूरा न कर लें, ये विरोध चलता रहेगा। इस विरोध के प्रति धीरज से समर्पण करने का मतलब यह है कि -- वर्तमान जीवन से जुडी मित्रता और खुशियों से सम्बन्धित अपनी प्राकृतिक प्राथमिकताओं का बलिदान कर देना, और सच्चाई के निमित्त अच्छे योद्धा की तरह दुःख को सहना, फिर वो दुःख चाहे जिस भी प्रकार

से आये, जब हम प्रभु की इच्छा करने का प्रयत्न करें और उनके राज्य के हित के कार्यों को आगे बढ़ाएं। वास्तव में प्रभु की सेवा में होने के लिए हमें -- पहले ध्यानपूर्वक और निरन्तर परमेश्वर की योजना को पढ़ते रहना है; दूसरा, इसकी आत्मा को सोख लेना है; और इसके द्वारा हमारा नेतृत्व हो, तीसरा, इस योजना को पूरा करने के लिए, उत्साहपूर्ण जोश से लग जाना है, और अपनी पूरी क्षमता से इसमें हमें सक्रिय हो जाना है, चाहे फिर इसके लिए हमें कोई भी कीमत या बलिदान की जरुरत हो। `Z.'03-164,165` R3199:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 मई)

पर इब्रानियों 5:14 पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई है।

जिन लोगों के पास परमेश्वर में सच्चा और ईमानदार विश्वास है, वे लोग परमेश्वर के वचनों के द्वारा उनमें बने हुए हैं। ये लोग अन्न खाने के लिए सयाने हो चुके हैं। इनका घर सोना, चांदी और बहुमूल्य पत्थर के ऊपर बना है यानी की दिव्यता, सच्चाई और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ, उनके विश्वास का आधार है। उनके अन्दर परमेश्वर का कार्य आगे बढ़ रहा है। ऐसे ही लोग, यदि वे परमेश्वर के प्रति वफादार और सच्चे हैं, तो सच्चाई और गलत उपदेशों में फर्क कर सकते हैं। यह जरुरी है कि हम जाने कि, हम किस बात पर विश्वास कर रहे हैं, और क्यों उस बात पर विश्वास कर रहे हैं? और सच्चाई को पूरी तरह से जानने के बाद, हमें निडर होकर, बिना समझौता किए इस सच्चाई का ऐलान करना है, क्योंकि यदि तुरही एक अनिश्चित आवाज़ निकाले तो कौन अपने आप को युद्ध के लिए तैयार कर सकता है? `Z.'03-167` R3200:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 मई)

1 शमूएल 16:7 यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।

यदि हम इस हकीकत को भूल जाएँ, कि परमेश्वर हमारे को हमारी इच्छा, विचार, अन्दर की भावना के अनुसार देखते हैं, और खुद को परमेश्वर की नज़र में शरीर के अनुसार आंकने लगें, तो निश्चय ही हम उसी अनुपात में अन्धकार में, अनिश्चितता में, और निराशा में चले जाएंगे। हमें ये नहीं भुलना चाहिए, कि आत्मा और इच्छा को इसकी धार्मिकता के कारण जीवित माना जाता है, क्योंकि हमारी इच्छा और आत्मा का तालमेल परमेश्वर के साथ होता है। इसलिए आएं, हम इच्छा की पूर्ती करने के मामले में और जीवन के आचरण से सम्बन्धित हमारे इरादों के मामले में कोई भी शिथिलता न दिखाएं, यदि हम उचित रीती से परमेश्वर की मर्जी न करें और अपने इरादों को धार्मिकता के माप दण्डों के अनुसार न रखें, तो उसी अनुपात में हमारे आत्मिक जीवन में हानि होती जायेगी। हम सही इच्छा करें, ये हमेशा सम्भव है, और कोई भी जो वफादार विश्वासी से कम हो, प्रभु यीशु में परमेश्वर के द्‌वारा ग्रहणयोग्य नहीं होगा। `Z.'03-171` R3203:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 मई)

रोमियों 8:13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।

जिस शर्त पर हम परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को लगातार बढ़ा सकते हैं और पहले पुनरुत्थान की महिमा के भागी हो सकते हैं, जो की हमारी आशा है, वह यह है कि, हमें अवश्य शरीर के कार्यों को मारना है, शरीर की अभिलाषाओं को नियंत्रण में रखना है, उन्हें मार डालना है, क्रूस पर चढ़ा देना है, और हमारे शरीर को केवल परमेश्वर की योजना और उनके सेवा कार्यों के लिए उपयोग में लाना है। प्रेरित इस शरीर की कमजोरियों और उन्हें मार डालने को कहीं और "युद्ध" लिखते हैं जहाँ वे कहते हैं, कि, आत्मा और शरीर एक दूसरे के विरोधी हैं, और उनमें युद्ध चलता है, और ये जीवन के अन्त तक, एक दूसरे के परस्पर विरोधी ही रहते हैं; और यदि आत्मा में इच्छा है और वह अपनी पूरी क्षमता के अनुसार शरीर की कमजोरियों के खिलाफ लड़ती हैं, तो परमेश्वर इस जय को सम्पूर्ण विजय समझेंगे, हमारे उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह के मोल के द्वारा। `Z. '03-172` R3203:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 मई)

रोमियों 8:14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।

यह वचन हमारा मार्गदर्शन करता है, जिसके द्वारा हम अपना सही स्थान जान जाते हैं, हमारी दौड़ की शुरुआत में हम कहाँ हैं, और दौड़ के अन्त में भी हम कहाँ हैं। क्योंकि यदि हम परमेश्वर की आत्मा के अनुसार चलाए चल रहें हैं, यदि हमारी दिशा परमेश्वर के बताए हुए मार्ग की ओर है, यदि हम उसी सही दिशा को खोज रहे हैं -- तभी हम परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। परमेश्वर उन सभी के मालिक हैं और उन्हें स्वीकार करते हैं जो मसीह के द्वारा उनके पास आते हैं, और जो लोग शादी

के वस्त्र के मूल्य पर भरोसा करते रहते हैं, और जो हृदय के इसी नजरिये को लगातार बनाये रखते हैं। `Z.'03-173` R3203:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 मई)

1 कुरिन्थियों 9:16 यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय।

हमारे पास जो सुसमाचार है, उसे दूसरों को सुनाने के लिए, हमें बहुत ही फुर्तीला होना चाहिए; दुःख में कराह रही सृष्टि को देखकर हमें सहानुभूति होनी चाहिए, हमारे जीवन में जो विभिन्न तरह के क्लेश आते हैं वे हमें परमेश्वर के वादों की ओर ले जाते हैं, और हमें हमारे परमेश्वर के वादे याद आने चाहिए, जिसके अनुसार आनेवाले राज्य में पूरी पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीष मिलेगी। कोई भी, छोटे से अवसर में भी, जब भी मौका मिले, यदि प्रतिदिन इस सुसमाचार को नहीं सुनाता है, तो या तो परमेश्वर की योजना पर उसके ज्ञान में कमी है या उसके विश्वास में कमी है या वह स्वार्थी है, और यदि ऐसा चलता रहा, तो परमेश्वर इसे नहीं स्वीकार करेंगे और आखिर में उसे परमेश्वर के राज्य में कोई भी हिस्सा नहीं मिलेगा। `Z.'03-174` R3205:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 मई)

1 यूहन्ना 2:25 और जिसकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है।

हम सभी को ये समझना चाहिए कि, हमें कुछ करना है, ताकि परमेश्वर के अनुग्रहित वादे पूरे हों। हमारे जीवन से सम्बन्धित सभी मामलों में परमेश्वर ने वादा किया है कि, हमें रोटी और पानी की घटी नहीं होगी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है, कि, इन्हें पाने के लिए जो उचित अवसर हमें मिलें, हम उनकी अवहेलना कर दें। परमेश्वर ने हमसे उनके राज्य में हिस्सा देने का वादा भी किया है; लेकिन इस बुलावे और चुनाव को सिद्ध करना, हमारे हाथों में हैं। परमेश्वर हमारे जीवन के हर एक मामले में, पूरी तरह से सामर्थ्य हैं और वे चाहते हैं कि वो अपना भाग हमारे लिए पूरा करें, परन्तु ये हमारे लाभ के लिए है कि, उन्होंने हमें बुलाया है, ताकि हम कर्मों के द्वारा अपने विश्वास को दिखा सकें और उचित रीति से परमेश्वर का सहयोग हर मामले में कर सकें। `Z.'03-175` R3205:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 मई)

कुलुस्सियों 2:6,7 अतः जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो, और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अधिकाधिक धन्यवाद करते रहो॥

झूठे सिद्धांतों के शिक्षकों के बीच सामान्य भावना यह है कि किसी एक विश्वास पर स्थापित होना कट्टरपंथी होने के समान है, जो यह सोचते हैं कि विश्वास में स्थापित होना, न तो आवश्यक है और न ही उचित है ... लेकिन बाईबल या उचित तर्क के द्वारा कभी भी साबित नहीं किये गए तथ्य को, यदि कोई अपने मन में गलत तरीके से स्वीकार करता है और उसे दृढ़तापूर्वक पकड़े रखता है, तो निश्चय ये कट्टरता है। लेकिन वह एक अविवेकी कट्टर पुरुष नहीं है, जो सरल विश्वास में, परमेश्वर के अधिकार पर, परमेश्वर के वचन को स्वीकार करता है। और ऐसे, और केवल ऐसे ही लोग हैं, जो ऐसा करते हैं, वे ही सत्य में स्थापित हैं। एक मजबूत और दृढ़ ईसाई और एक कट्टरपंथी के बीच का अंतर यह है कि एक सत्य में स्थापित है, जबकि दूसरा गलती या गलत उपदेशों में स्थापित है। `Z.'03-199` R3215:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 मई)

भजन संहिता 23:5 तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमड़ रहा है।

कटोरे के उमड़ने का दो महत्व है। ये आनन्द का कटोरा है और दुःख का कटोरा है, और दोनों ही तरफ से देखा जाये तो ये कटोरा उमड़ रहा है। जो प्रभु के आनन्द के कटोरे में सहभागी होंगे, उन्हें अवश्य प्रभु के दुःख के कटोरे में भी सहभागी होना होगा; हमें अवश्य प्रभु के साथ दुःख उठाना चाहिए, तभी हम उनके साथ राज्य भी करेंगे। पर अभी के क्लेशों की गिनती, उस महिमा के साथ तुलना करने के योग्य नहीं है, जो हमको पहले पुनरुथान के बाद मिलेगी, और इस तरह से हम क्लेश में भी आनन्दित रहने के योग्य रहते हैं, क्योंकि जिस तरह से बहुत सारे क्लेश आएंगे,

उसी तरह बहुत सारे आनन्द भी आएंगे, और प्रेरित पौलुस की तरह हम भी कह सकते हैं, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो"। `Z.'03-413` R3270:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 मई)

भजन संहिता 44:22 परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त मार डाले जाते हैं, और उन भेड़ों के समान समझे जाते हैं जो वध होने पर हैं॥

हमें यह याद रखना है की हममें से हर एक के पास केवल एक ही बलिदान है; जिसे हमें प्रभु की और उनके लोगों की सेवा के लिए मिले प्रत्येक अवसरों में, जैसे - जैसे ये अवसर हमारे पास आते हैं, लगातार सुधार करते हुए, इस एक बलिदान को दिन-प्रतिदिन प्रभु को भेंट में देते जाना है। हमें यह याद रखना है की हालाँकि यह एक बलिदान बहुत से छोटे - छोटे बलिदानों से मिलकर बना है, जिनमें से कुछ तो इतने छोटे हैं की उनका जिक्र भी नहीं किया जाता या उनपर ध्यान भी नहीं जाता, फिर भी, उस एक बलिदान को पूरा करने के लिये, जिसकी वाचा हमने परमेश्वर के परिवार में शामिल होते समय बाँधी थी, इन सभी छोटे - छोटे बलिदानों को पूरा करना आवश्यक है। जब हमने अपनी इच्छा का बलिदान किया, तब हमने अपना सबकुछ दे दिया; और जीवन के छोटे से छोटे मामलों में से कुछ भी अपने पास रखना - कुछ भी ऐसा जो हमें लगता है की प्रभु को भायेगा उसका बलिदान करने से इंकार कर देना - उस भेंट में से वापस रखने के समान है जिसे हमने पहले ही प्रभु को अर्पित कर दिया है। `Z.'03-408` R3266:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 मई)

2 कुरिन्थियों 7:1 अतः हे प्रियो, जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें॥

शाही याजक के कितने संभावित सदस्यों को यह पता चलता है कि उनके पास इस वचन के मुताबिक, कितनी दुर्भावना, धोखा, कपट, ईर्ष्या, बुरा बोलने की मलिनताएँ हैं? यह कहना सुरक्षित होगा कि, इन शरीर की कमजोरियों से संघर्ष करने के लिये, हर एक के अन्दर यदि सब नहीं तो कुछ मलिनताएँ हैं -- खासकर, जब हम इस याजक के कार्य (यानि ऊपरी बुलावे की दौड़) में जब आरम्भ में प्रवेश करते हैं। कितनी सावधानी से हम सब को, शरीर की इन सब मलिनताओं को दूर करने का प्रयत्न करना है! प्रत्येक को न केवल जीवन के हर एक कार्य और हर शब्द और हर विचार की छानबीन करनी चाहिए, बल्कि, इसके अलावा, उसके शब्दों, विचारों और कार्यों के पीछे के हर एक इरादे की भी छानबीन करनी चाहिए, ताकि वे पृथ्वी के सांसारिक दोषों से अधिक से अधिक शुद्ध हो सकें और प्रभु के लिए अधिक से अधिक ग्रहणयोग्य हों सकें! `Z.'03-408` R3267:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 मई)

1 शमूएल 15:22 सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

हमारे स्वर्गीय पिता हमें उनके वचन के प्रति बहुत सचेत रहने की इच्छा रखते हैं, और न कि एक पल के लिए, हम ये सोचें कि हम उसमें सुधार कर सकते हैं, या समय और परिस्थितियां हमारी उनके प्रति आज्ञाकारिता की उपयुक्तता को बदल देगी... आइये हम परमेश्वर का वचन सुने और वचनों के निकट रहें, परिणामों से न डरें, पर यह विश्वास रखें कि, हमारे परमेश्वर कभी भी न ऊँघते हैं और न सोते हैं, और वे इतने बुद्धिमान हैं कि, गलती नहीं कर सकते, और इसके साथ, हर आपातकालीन स्थिति का पूरी तरह से सामना करने के लिए वे योग्य हैं, जो हमपर आ सकती है, हमारे उनके प्रति आज्ञाकारिता के द्वारा। `Z.'03-218,219` R3224:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 मई)

इफिसियों 4:15 वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं।

अनुग्रह में बढ़ने का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि, परमेश्वर के समर्थन में बढ़ना, और उनके साथ एक अंतरंग निजी परिचय करना और एक घनिष्ट रूप से निजी संगति की आत्मा में बढ़ना ... इस प्रकार से अनुग्रह में बढ़ना और ज्ञान में न बढ़ना, असंभव है; क्योंकि परमेश्वर के साथ, इस तरह की संगति का उद्देश्य यही है की, हम प्रभु के साथ एक प्रकार से परमेश्वर के परिपूर्ण ज्ञान में ज्यादा बढ़ें और उनके साथ ज्यादा परिचित हो सकें - और इस तरह से हम परमेश्वर की दिव्य योजना के ज्यादा निकट आ पाएं, और हमको उनके साथ विशेषाधिकार मिले कि, हम प्रभु के साथ "सह-कर्मी बन पाएं उनकी दिव्य योजना को प्रभाव में लाने में। अगर, इसलिए, हम प्रभु से प्रेम करते हैं और आज्ञाकारी हैं और उनके समर्थन में

बढ़ने की इच्छा रखते हैं, तो उनके लिखित वचन हमारे प्रतिदिन का ध्यान और अध्ययन है; और इस प्रकार से हम उनके ज्ञान में बढ़ते हैं। `Z.'03-200` R3215:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 मई)

हबक्कूक 3:17,18 क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियां न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा, और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा॥

हम देखते हैं कि परमेश्वर, दुनिया में बुराई की अनुमति देते हैं, ताकि दुनिया इन कड़वे अनुभव से कुछ सबक सीखे, जो कि बुराई करने का एक तरह से स्वाभाविक इनाम है, लेकिन हम संतों के संबंध में भी बुराई की सेवा कार्य भी देखते हैं -- संतों की परिक्षा में, और उनके चमकाने और शुद्धिकरण में; उन्हें तैयार करने के लिए, और उन्हें जयवन्त बनकर योग्य साबित करने के लिए, ताकि वे उन अद्भुत चीजों को विरासत में प्राप्त कर सकें, जिसे परमेश्वर ने विश्वासयोग्य लोगों के लिए आरक्षित रखी हैं। `Z.'03-94` R3168:2 आमीन `

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 मई)

यशायाह 62:2,3 तेरा एक नया नाम रखा जाएगा ... तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी।

आइये हम कभी भी न भूलें कि हमलोग "विचित्र लोग" हैं, नाम के ईसाईयों के बड़े समूह से अलग हैं, और साथ ही साथ संसार से भी अलग हैं, हमारे पास ऊँची आशाएँ, ऊँचें लक्ष्य और उँची आकांक्षाएँ हैं और हमें परमेश्वर की गूढ़ और गहरी बातों को जानने की समझ दी गई है, हमें हमारे पुराने अंधकार से परमेश्वर की अद्भुत ज्योति में बुलाया गया है। और अगर इस तरह से हम दुनिया से और ईसाईयों से जिनमें बड़े पैमाने में संसार की आत्मा है, खुद को अलग पाते हैं, तो इसमें क्या आश्चर्य है कि, यदि हम उन सभी को हमारे साथ तालमेल से बाहर पाते हैं, और या वे हमें अनदेखा करते हैं या हमारा विरोध करते हैं। `Z.'03-164` R3199:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 मई)

यूहन्ना 16:22 वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं।

अभी की ताड़नाएँ पहले समय की ताड़नाओं की तुलना में ज्यादा सभ्य हैं। आज के विश्वासी लोगों को नाम के लिए पत्थरों या तीरों से नहीं मारा

जाता या शाब्दिक रूप से उनका सर कलम नहीं किया जाता है, लेकिन यह अभी भी सच है कि, दुष्ट धर्मी लोगों पर "कड़वे शब्दों के द्वारा" वार करता है, और उनके परमेश्वर के प्रति बहुत विश्वासी होने के कारण, उनकी निन्दा और बदनामी की जाती है और उनको दुनिया की संगति से काट दिया जाता है -- "जिनके सिर यीशु की गवाही देने के कारण काटे गए थे"। आइए हम में से हर एक, स्तिफनुस की नक़ल करें, जो की पहला मसीही शहीद था। आइए हम अपनी गवाही, स्तिफनुस के जैसे चमकते हुए चेहरे के साथ दें। आइए हम अपनी विश्वास की आँखों के द्वारा, प्रभु यीशु को परमेश्वर की दाहिनी और देखें, अपने वकील और मुक्तिदाता के रूप में। आइए हमारे शब्द हम संयम के साथ रखें जैसे कि स्तिफनुस के शब्द थे, और हमारे बारे में भी यह सत्य हो, जैसा कि स्तिफनुस के बारे में यह सत्य था, और जैसा कि उसके बारे में लिखा गया है, "अनुग्रह और सामर्थ्य से भरा हुआ" और "पवित्र आत्मा से भरा हुआ”।`Z.'97-57` R2109:6
आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 मई)

इब्रानियों 4:3 हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं।

प्रभु में हमारा विश्राम उतना ही पूर्ण है जितना कि उनपर हमारा विश्वास। वह जो पूरी तरह से विश्वास करता है, वह पूरी तरह से विश्राम कर पाता है; वह जो केवल आंशिक रूप से विश्वास करता है, वह आंशिक रूप से विश्राम कर पाता है। आत्मिक इस्राएली की आदर्श स्थिति इसमें है कि, अपने वर्तमान के अनुभव में वह परिपूर्ण विश्राम प्राप्त कर पाए, एक परिपूर्ण सब्त रखना, और एक दूसरे विश्राम के लिये जो इससे भी ज्यादा सम्पूर्ण है, परिश्रम करते हुए प्रतीक्षा करे - जो की परिपूर्ण स्थिति का वास्तविक विश्राम है - एक ऐसा विश्राम है, जो केवल परमेश्वर के लोगों के लिए ही रखा गया है। जैसा की इब्रानियों 4:9-11 वचनों में कहा गया है --"अतः हम उस विश्राम (सब्त) में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो कि कोई जन उनके (शारीरिक इस्राएलियों) समान आज्ञा न मान कर गिर पड़े"। `Z.'99-253` R2534:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 मई)

रोमियो 15:1 अतः हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें; न कि अपने आप को प्रसन्न करें।

सिद्धांतों को किसी भी विचार के लिए कभी नहीं छोड़ा जा सकता है; लेकिन स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अधिकारों को अक्सर दूसरों के हित में और दिव्य प्रसन्नता के लिए अनदेखा किया जा सकता है। प्रेरित पौलुस

सिद्धांत की रक्षा में किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार थे (गलातियों 2: 5,11), लेकिन अपने सांसारिक अधिकारों और विशेषाधिकारों और मसीह और कलीसिया के लिए स्वतंत्रता के बलिदान में, प्रेरित स्पष्ट रूप से हमारे प्रभु यीशु का अनुकरण कर रहे थे और सभी कलीसिया के लिए एक महान उदाहरण हैं। `Z.'97-75` R2119:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 मई)

तीतुस 2:14 एक ऐसी जाति (विचित्र लोग) बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो।

एक "विचित्र लोग," - पोशाक में विचित्र नहीं, न ही शिष्टाचार में, न भाषा में, न ही मूर्खतापूर्ण, संवेदनहीन रूपों और मूर्खताओं में; लेकिन विचित्र इस बात में हैं कि यह लोग संसार से और संसार की आत्मा से अलग हैं। इनमें मसीह की आत्मा है - प्रभु के लिए पूर्ण समर्पण की आत्मा है, और संसार और उसके स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से अलगाव है। यह अपने एकमात्र नियम के रूप में प्रभु के वचन का पालन करने के कारण विचित्र हैं। ये लोग विचित्र हैं क्योंकि जब सांसारिक ज्ञान दिव्य प्रकाशन के साथ मेल नहीं खाता है, तो वे उस सांसारिक ज्ञान को रद्द कर देते हैं। ये लोग विचित्र हैं क्योंकि वे संसार में होकर भी संसार के नहीं हैं। ये लोग विचित्र हैं क्योंकि इनमें एक निश्चित विश्वास है और अपने विश्वास के साथ और

उत्साह के साथ सद्भाव में कार्य करते हैं। ये लोग विचित्र हैं क्योंकि ये स्वयं से आत्म - बलिदान करते हैं और इनकी अपनी कोई इच्छा नहीं है, बल्कि जो इनके राजा की इच्छा है वही इनकी भी इच्छा है। ये लोग विचित्र हैं क्योंकि वे सत्य को जानते हैं, और अपने अंदर की आशा के लिए एक कारण देने में सक्षम है, जबकि अन्य केवल अटकलें लगाते हैं और आश्चर्य और संदेह करते हैं। `Z.'97-95` R2128:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 मई)

2 तीमुथियुस 3:16,17 सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए॥

हम सभी के लिए यह अच्छी तरह से याद रखना अच्छा होगा कि आत्मा के सभी अनुग्रह, दिव्य चीजों के ज्ञान में सभी बढ़ोतरी जो हम पहले ही प्राप्त कर चुके हैं, जिसने हमें परमेश्वर और पवित्रता के निकट लाने में मदद की है, ये सब हमारे पास पुराने नियम के वचनों के द्वारा और हमारे प्रभु और उनके प्रेरितों के प्रेरणा से लिखे वचनों के माध्यम से आए हैं: और न ही कभी भी इस सच्चे ज्ञान के लिए दूसरे माध्यमों पर जाना

आवश्यक होगा, जो हमें वादा किये गए उद्धार के लिए तैयार करेगा। `Z.'97-170` R2166:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 मई)

2 तीमुथियुस 1:7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

परमेश्वर ने उनके लोगों को जो आत्मा दी है, वो भय की आत्मा नहीं है, बल्कि इसके विपरीत सामर्थ्य, ऊर्जा, उत्साह की आत्मा है जो की प्रेम के द्वारा जागृत है; - परमेश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति, और उन्हें प्रसन्न करने और उनकी सेवा करने की इच्छा; सच्चाई के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति, और परमेश्वर के लोगों के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति और उनके लोगों को पवित्र चीज़ों में बढ़ाने की इच्छा और जहां तक अवसर मिले सब के साथ भलाई करने की इच्छा,... एक "संयम मन" की आत्मा; एक ऐसा मन जो हर विषय पर परमेश्वर के वचन के द्वारा किले के जैसा मजबूत होता है, और इसलिए, जब हमारा मन मनुष्य के भय से पूरी तरह से निडर हो जाता है, तो यह मन प्रेम की ऊर्जा का उपयोग करते हुए, जो प्रेम समर्पित हृदय के अन्दर एक आग के रूप में जलते रहता है, तब यह प्रेम समय, मौसम और तरीकों से सम्बंधित निर्णय, बुद्धिमानी से ले पाता है। `Z.'97-170` R2166:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 मई)

यूहन्ना 13:14 तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए।

यह ये दर्शाता है कि मसीह के शरीर के सदस्यों को एक दूसरे की भलाई के लिए मिलकर निगरानी करनी चाहिए; ताकि हम एक दूसरे को साफ़, पवित्र, शुद्ध रख सकें, और इस वर्तमान बुरे संसार के क्लेशों और लालसाओं और घेराव पर जय पाने में एक दूसरे की सहायता कर सकें, क्योंकि इन क्लेशों, लालसाओं और घेरावों, तीनों की उत्पति का स्रोत, "दुनिया, शरीर और शैतान है"...केवल जैसे - जैसे हम आत्मा के विभिन्न अनुग्रहों में बढ़ते हैं -- नम्रता, धीरज, सौम्यता, भाईचारा, प्रेम - उसी के अनुसार हम चरित्र और जीवन की पवित्रता के इन शृंगारों को पहनने में, और दूसरों को चरित्र के इस मैलेपन से छुटकारा पाने में खासकर सहायता करने की आशा कर सकते हैं, ताकि दूसरे भी चरित्र के इस मैलेपन से जो की उन्हें दुनिया और शरीर से आती है उससे छुटकारा पा सकें। `Z.'97-243` R2201:6; 2202:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 मई)

1 कुरिन्थियों 13:5 प्रेम... झुंझलाता नहीं।

मनुष्य में स्वाभाविक रूप से उपस्थित बुराई, और आनुवंशिकता, और तंत्रिका संबंधी विकार चाहे कितना भी हमें घबराहट, चुप्पी और चिड़चिड़ापन

की आत्मा की ओर बढ़ाने की कोशिश करे, प्रभु की आत्मा से भरे हर हृदय को अपने शरीर में उपस्थित बुराई के इस स्वभाव का विरोध करना चाहिए, और इसके खिलाफ एक अच्छा युद्ध करना चाहिए। यह कहना ठीक नहीं होगा कि, "यह मेरा तरीका है;" क्योंकि पाप में गिरे हुए मनुष्य के स्वभाव से जुड़े सभी तरीके बुरे हैं: यह नये स्वभाव का कार्य है की, इस युद्ध में और शरीर और शैतान के अन्य कार्यों में वह पुराने स्वभाव पर जय पाये: लेकिन केवल कुछ ही लोग होते हैं जो अपने परिवारों और मित्रों को प्रेम के अनुग्रह की इस सामर्थ्य को इससे भी अधिक दिखाते हैं। यह अनुग्रह जैसे - जैसे बढ़ता है, उसे परमेश्वर के प्रत्येक बच्चे को मधुर स्वभाव वाला बनाना चाहिए। `Z.'97-247` R2204:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 मई)

रोमियों 12:21 बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो॥

हमें कभी भी बुरे शब्दों या तरीकों या आचरण का प्रयोग नहीं करना है। यदि हम ऐसा करते हैं तो इसका मतलब है कि, हमने थोड़े समय के लिए शत्रु से हाथ मिला लिया है, या हमने यह स्वीकार कर लिया है कि शत्रु के साधन और तरीके, हमारे कप्तान, जिनके हम हैं, उनके साधन और तरीके की तुलना में बेहतर हैं। किसी को क्रोध का उत्तर क्रोध के साथ देना, किसी को बुराई के बदले में बुरा कहना, कड़वे शब्दों का उत्तर कड़वे

शब्दों के साथ देना, गालियों का उत्तर गालियों के साथ देना, ताड़ना का उत्तर ताड़ना के साथ देना, किसी को घात का उत्तर घात के साथ देना, या इन सब में किसी को भी करने का मतलब होगा कि, हम बुराई को बुराई के साथ दूर करने की कोशिश कर रहें हैं। यह, जो की हमारे गिरे हुए स्वभाव के लिए स्वाभाविक है, उससे हमें बचने की आज्ञा दी गई है, ताकि हम अच्छी तरह से अपनी नये स्वभाव में बढ़ोतरी कर सकें। हमारे विरोधी शैतान के द्वारा गुमराह होकर उसके किसी भी तरीकों का किसी भी प्रकार से उपयोग करने का मतलब है, बुराई से हार जाना। Z.'97-267` R2215:1
आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 मई)

1 कुरिन्थियों 8:1 ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है।

सभी लोग जो दिव्य योजना को दूसरों को सिखाते हैं, उनके लिए विचित्र लालसाएँ आती हैं। ताकि परमेश्वर और उनके लोगों की सेवा करने के आदर को पाने के लिए उन्हें ज्यादा मात्रा में पवित्र आत्मा के अनुग्रह की जरुरत पड़े, साथ ही साथ ज्ञान की भी जरुरत पड़े। इसलिए, जो भी दूसरों को सिखाने के लिए शिक्षक बने, वो परमेश्वर का संवाददाता हो, उसे चाहिए की वो अपने अन्दर, परमेश्वर की पवित्र आत्मा के सभी अनुग्रहों

का पैदा करे, और इसमें नम्रता भी शामिल हो; और इन अनुग्रहों (प्रेम) को ज्ञान के साथ मिलाकर, हम दूसरों की सेवा करते हुए उनके साथ-साथ खुद को भी तैयार कर सकते हैं। `Z.'97-277` R2219:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 मई)

फिलिप्पियों 2:3 दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।

पौलुस का कहना है कि सभी को विनम्रता के अनुग्रह में बढ़ना चाहिए, और यह कि प्रत्येक मामले में प्रत्येक व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए की वह "विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करे", आत्म - प्रशंशा और सर्वश्रेष्ठता को पाने के सभी प्रयासों को खुद से पूरी तरह से दूर कर देना चाहिए, क्योंकि वे प्रभु की आत्मा और कलीसिया की आशीषों के सबसे बड़े शत्रु हैं। इसके विपरीत, प्रत्येक के पास मन की वह दीनता होनी चाहिए, जो साथी सदस्यों के अच्छे गुणों को देख सके और इनमें से कुछ गुणों को कम से कम अपने स्वयं के गुणों से श्रेष्ठ मान सके। किसी भी सभा में किसी एक व्यक्ति में सभी प्रतिभाओं, और सभी क्षमताओं के होने की उम्मीद कभी भी नहीं करनी चाहिए। इसलिए, हममें से प्रत्येक, यदि वह मन का दीन है, तो दूसरों में कुछ अच्छे गुणों को या अपने से श्रेष्ठ अनुग्रहों को देख सकेगा, और इन गुणों को पहचानकर प्रसन्न होगा

और उनके अनुसार इन गुणों को रखने वाले स्वामी का खुशी से आदर करेगा। `Z.'97-296` R2228:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 मई)

2 कुरिन्थियों 5:6 अतः हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं (जब तक हम वर्तमान परिस्थितियों से - अपने आप से और हमारी बाहरी दशा या परिस्थिति से, पूरी तरह से संतुष्ट महसूस करते हैं), तब तक प्रभु से अलग हैं।

यदि हम परमेश्वर के निकट जी रहे हैं, "परमेश्वर के साथ चल रहे हैं", तो हम वर्तमान उपलब्धियों, स्थितियों, आदि से पूरी तरह से संतुष्ट महसूस नहीं करेंगे; बल्कि यात्रियों और परदेशियों की तरह महसूस करेंगे, एक बेहतर विश्राम और एक बेहतर घर की खोज में होंगे, "जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं।“ लेकिन यह बात, जैसा की सातवें वचन में वर्णन किया गया है, केवल उन्हीं लोगों के लिये सच है जो रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं। “इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं (परमेश्वर के प्रति विश्वास से भरपूर, हम विश्वास पर चलकर आनन्दित होते हैं), देह से अलग (पृथ्वी पर बेघर, परदेशी और यात्री) होकर”, प्रभु के साथ हमारे भाईचारे की आत्मा में, "प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।" `Z.'97-305` R2231:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 मई)

यूहन्ना 14:27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं:... तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।

जितना अधिक हम दुनिया, शरीर और शैतान पर जय पाते हैं, जितना अधिक हम अपने पिता की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं जो स्वर्ग में है, जितना अधिक हम अपने प्रिय उद्धारकर्ता की संगति और सम्पर्क चाहते हैं, जितना अधिक हम उन चीजों को करने की कोशिश करते हैं जो प्रभु की मनभावनी हैं, उतना ही अधिक से अधिक हमें वो आनंद और शांति मिलेगी जिसे कोई मनुष्य हमसे छीन नहीं सकता, और जिसे परीक्षाएँ, कठिनाईयाँ और ताड़नाएँ केवल और अधिक मीठा और कीमती बना देंगीं। `Z.'97-306` R2232:5 "और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा।" - यूहन्ना 16:22 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 मई)

रोमियो 12:12 आशा में आनन्दित रहो; क्लेश मे स्थिर रहो;

यह वचन मसीही के जीवन की बड़ी लड़ाई के एक महत्वपूर्ण हिस्से को बताता है। उसे पुराने स्वभाव की स्वाभाविक प्रवृत्तियों से लड़ना चाहिए और अपने उद्धार के महान कप्तान के बल पर विश्वास की जीत की

उम्मीद करनी चाहिए। उसे समृद्धि के चापलूसी और भ्रामक प्रभावों के आगे नहीं झुकना चाहिए, न ही प्रतिकूलताओं के बोझ तले दबना चाहिए। उसे जीवन की परीक्षाओं को उसके स्वभाव को खट्टा करने और सख्त करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, जो की उसे उदास, या चिड़चिड़ा, या कड़वा, या निर्दयी बना दे। न ही उसे अहंकार या आडंबर या आत्म-धार्मिकता को पनपने देना है और न ही सांसारिक चीजों पर ध्यान देना है, जिन्हें प्रभु ने अपने प्रावधानों के अंतर्गत एक भंडारी के रूप में उसकी विश्वसनीयता को परखने के लिये उसे दी है। `Z.'95-20` R1759:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (31 मई)

रोमियों 14:21 भला तो यह है कि तू न मांस खाए और न दाखरस पीए, न और कुछ ऐसा करे जिससे तेरा भाई ठोकर खाए।

प्रभु के भाइयों की ठोकर का कारण बनना, प्रेम के कानून के और प्रभु की आज्ञा के विरुद्ध एक बहुत ही गंभीर अपराध है, (मत्ती 18:6 वचन), लेकिन हमारे लिए अन्य लोगों की ठोकर का कारण बनना, - उनको सच्चाई में और विश्वास के घराने में भाई बनने में बाधा बनना भी प्रभु की दृष्टि में गंभीर अपराध होगा। इसलिए, यह स्पष्ट है कि यद्यपि ज्ञान हमारे विवेक और हमारी स्वतंत्रता के सभी प्रतिबंधों को हटा सकता है,

फिर भी प्रेम को पहले आना चाहिए, और स्वतंत्रता का अभ्यास करने से पहले इसे प्रेम की मंज़ूरी मिलनी चाहिए। प्रेम हमको एक दृढ़ आज्ञा देता है, जैसा की वचन कहते हैं -- तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख। इसलिये हर सवाल के उत्तर का निर्णय अंततः प्रेम से करना चाहिए, न की ज्ञान से, और न ही स्वतंत्रता से। `Z.'03-43` R3145:6 आमीन